ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८ १२५

बुलेटिन संख्या-२३
दिनांक-शनिवार,२३ मार्च,२०१६

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३२.५ एवं १३.३ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ७४ सुबह में एवं दोपहर में ४२ प्रतिशत, हवा की औसत गति २.२ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ५.५ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ८.६ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में २०.६ एवं दोपहर में ३१.३ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(२४ से २७ मार्च,२०१६)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी २४ से २७ मार्च,२०१६ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- उत्तर बिहार के जिलों में २६ मार्च के आसपास गरजवाले बादलो के बनने की संभावना के साथ हल्की बर्षा या बूंदाबूंदी हो सकती है। इस मौसमीय सिस्टम का प्रभाव तराई के जिलों जैसे- पूर्वी व पश्चिमी चंपारण, शिवहर, सीतामढ़ी, दरभंगा एवं मधुबनी में अधिक देखा जा सकता है। कुछ असर मैदानी भागो के जिलों में भी रह सकता है।
- अधिकतम तापमान ३१ से ३३ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान १४ से १६ डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- इस अवधि में औसतन ३-५ कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यतः पछिया हवा चल सकती है। हलाकि २५ से २७ मार्च में कहीं-कहीं पुरवा हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ६५ से ७५ प्रतिशत तथा दोपहर में ३५ से ४५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- २६ मार्च के आसपास हल्की वर्षा/बुंदा-बुंदी की संभावना को देखते हुए कृषक भाई फिलहाल खड़ी फसलो में सिंचाई स्थगित रखें। खड़ी फसलो में कीटनाशक दवा का छिड़काव आसमान साफ रहने पर ही करें।
- गरमा मूंग तथा उरद की बुआई का उपयुक्त समय चल रहा है। किसान भाई प्राथमिकता देकर बुआई करें। खेत की जुताई में २० किलो ग्राम नेत्रजन, ४५ किलोग्राम स्फूर, २० किलोग्राम पोटाश तथा २० किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। मूंग के लिए पूसा विशाल, सम्राट, एस०एम०एल०-६६८, एच०यू०एम०-१६ एवं सोना तथा उरद के लिए पंत उरद-१६, पंत उरद-३१, नवीन एवं उत्तरा किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के दो दिन पूर्व बीज को कार्बेन्डाजीम २.५ ग्राम प्रति किलो ग्राम की दर से शोधित करें। बुआई के ठीक पहले शोधित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करें। बीजदर छोटे दानों के प्रभेदों हेतु २०-२५ किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर तथा बड़े दानों के प्रभेदों हेतु ३०-३५ किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई की दूरी ३० x१० से०मी० रखें।
- ओल की रोपाई करें। रोपाई के लिए *गजेन्द्र* किस्म अनुशंसित है। प्रत्येक ०.५ किलोग्राम के कन्द की रोपनी के लिए दूरी 75x75 से० मी० रखें। ०.५ किलोग्राम से कम वजन की कंद की रोपाई नहीं करे। बीज ८० क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से रखें। बुआई से पूर्व प्रति गड्ढ़ा ३ किलोग्राम सड़ी हुई गोबर, २० ग्राम अमोनियम सल्फेट या १० ग्राम युरिया, ३७.५ ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट एवं १६ ग्राम पोटेशियम सल्फेट का व्यवहार करे। ओल की कटे कन्द को ट्राइकोर्डमा भिरीडी दवा के ५.० ग्राम प्रति लीटर गोबर के घोल में मिलाकर २०-२५ मिनट तक डुबोकर रखने के बाद कन्द को निकालकर छाया में १०-१५ मिनट तक सुखने दें उसके बाद उपचारित कन्द को लगायें ताकि मिट्टी जनित बीमारी लगने की संभावना को रोका जा सके तथा अच्छी उपज प्राप्त हो सके।
- गरमा सब्जियों जैसे भिन्डी, नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा की फसल में आवश्यकतानुसार निकाई-गुड़ाई करें। भिण्डी की छोटे-छोटे पौधों में कीट की निगरानी करें। कीट का प्रकोप फसल में दिखने पर मैलाथियान ५० ई०सी० या डाइमेथोएट ३० ई०सी० दवा का १ मि० ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- लत्तर वाली सब्जियों जैसे नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा की छोटे-छोटे पौधों में लाल भृंग कीट की निगरानी करें। पौधों की प्रारंभिक अवस्था में इस कीट से फसल को काफी नुकसान होता है। गाय के गोबर की राख में थोड़ा किरासन मिलाकर पौधों पर सुबह में भुरकाव करने से इस कीट का आक्रमण कम हो जाता है। अधिक नुकसान होने पर क्लोरोपायरीफास २ प्रतिशत धूल दवा का २० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पौधों की जड़ों के पास मिट्टी में मिला देने से इस कीट शिशु नष्ट हो जातें है। पत्तियों पर डाइक्लोरवाँस ७६ ई०सी० का १ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- मार्च-अप्रैल माह में थ्रिप्स कीट की संख्या अपने चरम पर पहुँच जाती है। इनकी समय पर रोक-थाम नहीं होने से फसल में रोग-व्याधि आ जाती है एवं उपज में काफी कमी आती हैं। इसे देखते हुए प्याज उत्पादक कृषक बन्धु फसल में थ्रिप्स कीट की रोक-थाम प्राथमिकता से करें। यह आकार में अतिसुक्ष्म होते हैं तथा पत्तियों की सतह पर चिपक कर रस चुसते है जिससे पत्तियों का ऊपरी हिस्सा टेढ़ा-मेढा हो जाता है। पत्तियों पर दाग सा दिखाई देता है जो बाद में हल्के सफेद हो जाते है। कीट का प्रकोप फसल में दिखने पर प्रोफेनोफॉस ५० ई०सी० दवा का १.० मि०ली० प्रति लीटर पानी या इम्डिाक्लोप्रिड दवा का १.० मी.ली. प्रति ४ लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव १०-१५ दिनों के अन्तराल पर दो बार दवा बदल-बदल कर करें।
- हरा चारा के लिए ज्वार की कोहवा प्रभेद लगाएँ। ज्वार के साथ हाईब्रीड मेथ या बोरी जरुर लगावें।

आज का अधिकतम तापमानः ३३.८ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.८ डिग्री अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः १३.८ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से २.४ डिग्री कम

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी